P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में पूर्ण परिवर्तन (क्रान्ति) की आवश्यकता

दिनेश प्रताप सिंह
व्याख्याता,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
आई.एम.आर.,
गाजियाबाद, उ.प्र., भारत

सारांश

भारतीय समाज ने भी स्वयं की आवश्यकताओं एव हितों के संदर्भ में कुछ मानदंड विकसित किए, राष्ट्र निर्माण की एक दिशा निर्धारित की जिसे भारत के संविधान में लिपिबद्ध किया गया। सम्पूर्ण क्रान्ति 'लोकनायक' जयप्रकाश नारायण द्वारा परिकल्पित एक अवधारणा है जिसके अन्तर्गत उन्होंने जीवन के प्रत्येक पक्ष में बदलाव हेतु अहिंसक क्रान्ति की आवश्यकता को रेखांकित किया। सम्पूर्ण क्रान्ति के अन्तर्गत उन्होंने इसके सात अंगों का वर्णन किया जिसमें से एक शैक्षिक क्रान्ति है। इस प्रकार शिक्षा के संदर्भ में जिस सम्पूर्ण क्रान्ति की अवधारणा उन्होंने प्रस्तुत की वह वर्तमान शिक्षा में बदलाव की एक कुंजी सिद्ध हो सकती है। उन्होंने वर्तमान शिक्षा में आमूल–चूल परिवर्तन पर बल देते हुए अनुपयोगी एवं गलत ढंग से शिक्षित करने वाली शिक्षा व्यवस्था के विरूद्ध आन्दोलन करने की अपील की। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आवश्यकता है उसी शैक्षिक क्रान्ति की जिसे उन्होंने सम्पूर्ण क्रान्ति के अन्तर्गत प्रस्तुत किया।

संक्षेप में संविधान की उद्देश्यिका में प्रतिबिम्बित होती है–''हम भारत के लोग भारत को सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा ओर अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए तथा उन सबमें व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के दृढ़संकल्पित होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26.11.1949 ई0 (मिति मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं। परन्तु हमारी शिक्षा उद्देश्यिका की भावनाओं से काफी दूर हो चुकी है।''

मुख्य शब्द : उद्देशिका, मताधिकार, अभिव्यक्ति, लोकतन्त्रात्मक, क्रान्तिकारी, समाजवादी, वर्गविहीन, जीवनोपयोगी।

प्रस्तावना

भारतीय समाज ने भी स्वयं की आवश्यकताओं एव हितों के संदर्भ में कुछ मानदंड विकसित किए, राष्ट्र निर्माण की एक दिशा निर्धारित की जिसे भारत के संविधान में लिपिबद्ध किया गया जहां लगभग 50 प्रतिशत मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग नहीं करते वह कैसा लोकतंत्र है? इसका अर्थ यह है कि लगभग 50 प्रतिशत भारतीय जनता यहां की राजनैतिक व्यवस्था को पूरी तरह नकारती है। यहां की लोकतांत्रिक व्यवस्था लोगों की आकांक्षाओं एवं हितों को पूर्ण करने में असमर्थ रही है यहां की राजनैतिक व्यवस्था भ्रष्टाचार एवं बाहुबल से पूरी तरह प्रभावित है। जो विकास का प्रारूप है उसका समाजवाद से कोई संबंध ही नहीं है बल्कि ठीक इसके विपरीत पूंजीवाद व्यवसायिकता की तरफ अग्रसर है। लोगों पर व्यक्तिगत स्वार्थ, भ्रष्टाचार इत्यादि पूरी तरह हावी है। शिक्षा व्यापार बन चुकी है, मानवीय मूल्यों का अभाव है, एवं सत्य के मार्ग पर चलने का साहस नहीं है। शिक्षित युवा बेरोजगारी से त्रस्त है। सम्पूर्ण व्यवस्था भ्रष्टाचार में डूब चुकी है। यह भारतीय लोकतंत्र की वास्तविक तस्वीर। यह तस्वीर तभी बदल सकती है जब एक क्रान्ति हो। ऐसी ही क्रान्ति की एक रूपरेखा जयप्रकाश नारायण ने प्रस्तुत की थी जिसे उन्होंने सम्पूर्ण क्रान्ति का नाम दिया। जयप्रकाश नारायण भारत के एक प्रसिद्ध समाजवादी चिन्तक थे जिन्होंने पूरी व्यवस्था में परिवर्तन करने हेतु 5 जून सन् 1974 को सम्पूर्ण क्रान्ति का उद्घोष किया तथा उस समय की वर्तमान व्यवस्था के विरूद्ध तथा लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा हेतु आंदोलन का नेतृत्व किया जिसे जे पी आन्दोलन

भी कहते है। उनके अनुसार यह सम्पूर्ण क्रान्ति बल्कि एक वैचारिक क्रान्ति की आवश्यकता है जो प्रत्येक व्यक्ति के स्तर पर हो। जयप्रकाश नारायण ने स्पष्ट कहा था कि सत्ता परिवर्तन से सांपनाथ की जह नागनाथ आते हैं और अब इसे लोग अपनी आँखों से देख रहें है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. सम्पूर्ण क्रान्ति की आवश्यकता का अध्ययन।
2. सम्पूर्ण क्रान्ति के महत्व का अध्ययन।
3. जयप्रकाश नारायण के शैक्षिक विचारों का अध्ययन।
4. जयप्रकाश नारायण के सांस्कृतिक क्रान्ति का अध्ययन।
5. जयप्रकाश नारायण के सामाजिक उन्नयन के सुझावों का अध्ययन।
6. जयप्रकाश नारायण के शैक्षिक विचारों का छात्रों के जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
7. जयप्रकाश नारायण के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता का अध्ययन।

इस तरह सम्पूर्ण क्रान्ति व्यक्ति व समाज के जीवन के हर क्षेत्र में की जाने वाली क्रान्ति है। जयप्रकाश नारायण ने इस सम्पूर्ण क्रान्ति के सात अंगों का उल्लेख किया जो निम्नलिखित है।

1. शैक्षिक क्रान्ति
2. सामाजिक क्रान्ति
3. आर्थिक क्रान्ति
4. राजनीतिक क्रान्ति
5. नैतिक–आध्यात्मिक क्रान्ति
6. सांस्कृतिक क्रान्ति
7. वैचारिक–बौद्धिक क्रान्ति

शिक्षा के संदर्भ में सम्पूर्ण क्रान्ति

सम्पूर्ण क्रान्ति व्यक्ति व समाज में परिवर्तन हेतु अहिंसक क्रान्ति है यह प्रत्येक व्यक्ति व समाज में वैचारिक परिवर्तन की क्रान्ति है। यदि व्यक्ति व समाज को बदलना है तो इसमें सबसे महत्वपूर्ण भूमिका शिक्षा की होती है। इसलिए सम्पूर्ण क्रान्ति तभी सफल हो सकती है जब उसके अनुसार शिक्षा की रूपरेखा विकसित की जाए।

जयप्रकाश नारायण का यह मानना था कि वर्तमान शिक्षा पद्धति समाज की आवश्यकताओं एवं हितों को पूर्ण करने में अक्षम है इसलिए उस अनुपयोगी शिक्षा–पद्धति के विरूद्ध जेहाद बोलना होगा, शिक्षा में क्रान्ति करनी होगी। उन्होंने कहा कि ''वर्तमान सड़ी हुई व्यर्थ की शिक्षा–पद्धति के विरूद्ध जेहाद बोलना होगा, क्योंकि यह शिक्षा व्यवस्था एक ओर तो हमारे अधिकांश बच्चों को अशिक्षित छोड़ देती है और दूसरी ओर वह बच्चों को गलत ढंग से शिक्षित करती है। आज भी यहां अंग्रेजों की बनायी हुई शिक्षा पद्धति ही चालू है, यत्र–तत्र कुछ फर्क हुआ है। (नारायण, 1999, पृ0 31)

इसलिए उन्होंने शैक्षिक क्रान्ति को सम्पूर्ण क्रान्ति के प्रमुख अंग के रूप में आवश्यक मानते हुए इसके अन्तर्गत शिक्षा में निम्नलिखित क्रान्तिकारी परिवर्तनों हेतु क्रान्ति का उद्घोष किया है–

1. समाजवादी संस्कृति का निर्माण
2. जीवनोपयोगी शिक्षा
3. भारतीय दृष्टिकोण पर आधारित शिक्षा सिर्फ सत्ता परिवर्तन से संभव नहीं है
4. ग्रामोन्मुखी शिक्षा
5. डिग्री–विहीन शिक्षा
6. श्रममूलक शिक्षा
7. सभी को न्यूनतम शिक्षा

समाजवादी संस्कृति का निर्माण

चूंकि भारतीय संविधान में इस देश को एक समाजवादी गणराज्य के रूप में विकसित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था ठीक इसके विपरीत दिशा में गतिमान है। जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रान्ति ऐसी शिक्षा व्यवस्था में आमूल–चूल परिवर्तन हेतु क्रान्ति है जिससे कि इस देश में एक समाजवादी संस्कृति का निर्माण हो। जयप्रकाश नारायण के अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे लोगों में समाजवादी विचारों का विकास हो, समाजवादी मनुष्य का निर्माण हो ओर जिससे अन्ततः समाजवादी संस्कृति एवं सभ्यता का निर्माण हो।

उन्होनें कहा था कि ''समाजवाद सिर्फ समाज का बाह्य रूप बदलने से नहीं होता, बल्कि यह तो जीवन की पद्धति है, जीवन के मूल्यों के मिलने से आ सकता है। किन्तु समाजवादी आंदोलन ने अब तक कानून बनाने का ही काम किया है, व्यक्ति को बनाने का नहीं.... राजतंत्र द्वारा बाह्य समाजवाद ही स्थापित किया जा सकता है, समाजवादी जीवन के मूल्य स्थापित नहीं किये जा सकते। उसका आर्थिक अथवा सामाजिक बाह्य ढांचा जरूर खड़ा हो जाता है किन्तु समाजवादी संस्कृति का निर्माण नहीं होता। समाजवाद का संबंध समाजवादी सभ्यता और समाजवादी मनुष्य से है।

अतः जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रान्ति शिक्षा में ऐसे परिवर्तन हेतु क्रान्ति है जिसके फलस्वरूप लोगों में समाजवादी विचारों का विकास हो, जिससे इस देश में समाजवादी संस्कृति का निर्माण हो सके।

जीवनोपयोगी एवं रोजगोरन्मुखी शिक्षा

जयप्रकाश नारायण का कहना था कि शिक्षा जीवनोपयोगी तथा रोजगारोन्मुखी होनी चाहिए। ऐसी शिक्षा का कोई अर्थ नहीं जिसका उपयोग व्यक्ति बेहतर जीवन हेतु न कर सके। वर्तमान समाज की मूल समस्या जीवनोपयोगी शिक्षा का अभाव है जिससे लोग बेकारी, बेरोजगारी के शिकार है। अतः शिक्षा का सम्पूर्ण स्वरूप बदलना होगा ऐसी शिक्षा की रूपरेखा तैयार करनी होगी जो निरर्थक शिक्षा में समय बर्बाद न कर जीवनोपयोगी शिक्षा दें। इस संदर्भ में जयप्रकाश नारायण ने कहा कि शिक्षा में आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता है। शिक्षा में क्रान्तिकारी बदलाव की आवश्यकता है। प्रत्येक व्यक्ति की योग्यता, अभिक्षमता, रूचि इत्यादि के आधार पर उन्हें ऐसी शिक्षा दी जाए जिसका उपयोग वह अपने जीवन को बेहतर बनाने में कर सके, आत्मनिर्भर बन सके। जयप्रकाश नारायण ने कहा कि ''शिक्षा ऐसी हो, जो जीवनपयोगी हो। जिस शिक्षा को प्राप्त करके लोग अपने पैरों पर खड़े हो सके, कुछ कर सकें। वर्तमान शिक्षा से तो ऐसा ही होता है कि हम नौकरियां खोजते हैं ओर दर–दर ठोकरे खाते हैं। नौकरियां नहीं मिलती है तो जीवनयापन का रास्ता ही नहीं रहता । उनका यह

विश्वास था कि जो छात्र–अशान्ति है उसका कारण अपराधवृत्ति नहीं है बल्कि अनुपयुक्त और कुछ मामलों में सड़ी हुई शिक्षा–पद्धति तथा बेरोजगारी से उत्पन्न निराशा एवं सामाजिक आर्थिक विकास की गलत नीतियां है।

उनका कहना था कि रोजगार का अधिकार एक स्वस्थ्य लोकतंत्र के लिए उतना ही अनिवार्य है जितना वोट का अधिकार, इसलिए शिक्षा को रोजगारन्मुखी बनाया जाए और साथ ही सभी शिक्षित युवकों के लिए रोजगार के अवसर पैदा किए जाएं (नारायण, 1979, पृ0 21)। उन्होंने कहा था कि, ''माध्यमिक स्तर से शिक्षा को रोजगार–अभिमुखी बनाया जाए, जिसके साथ आर्थिक योजना की एक ऐसी प्रणाली हो जो रोजगार की गारंटी करें। शिक्षण संबंधी नौकरियों को छोड कर अन्य नौकरियों के लिए विश्वविद्यालय की डिग्री आवश्यक न रहे (नारायण, 1979, पृ0 61)''।

इस प्रकार जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रान्ति शिक्षा में ऐसे परिवर्तन हेतु क्रान्ति है जिसके फलस्वरूप सभी लोगों को जीवनोपयोगी शिक्षा मिल सके तथा सभी लोग आत्मनिर्भर बन सकें।

भारतीय दृष्टिकोण पर आधारित शिक्षा

जयप्रकाश नारायण ने कहा था कि हमारी शिक्षा–पद्धित भारतीय यथार्थ एवं भारतीय दृष्टिकोण से जुड़ी हुई नहीं रही है, स्वतंत्रता के पूर्व भी नहीं, उसके बाद भी वह हमारी स्थानीय आवश्यकताओं, वित्तीय वास्तविकताओं और पारंपरिक जीवन–मूल्यों से कटी रही (श्रीवास्तव, 2002, पृ0 65)।

भारतीय शिक्षा–पद्धति का आधार आज भी वही है जो स्वतंत्रता पूर्व अंग्रेजों ने अपनी आवश्यकताओं व अपने देश के हितों के अनुसार स्थापित किया, जिसका परिणाम यह रहा कि यह शिक्षा–पद्धति भारतीय समाज की आवश्यकताओं को पूर्ण करने में अक्षम रही तथा जो यहां के पारंपरिक मूल्य अहिंसा, सत्य और बंधुत्व इत्यादि को लोगों में विकसित करने में भी निष्प्रभावी होती रही। जिस समाजवादी गणराज्य के रूप में भारत को विकसित करने का लक्ष्य रखा गया उसकी शिक्षा–पद्धति का तो समाजवाद से कोई संबंध नहीं रह गया। जयप्रकाश नारायण का विचार था कि शिक्षा–पद्धति को भारतीय दृष्टिकोण के अनुसार विकसित किया जाए, जो भारतीय समाज की आवश्यकताओं को पूर्ण करे तथा पारंपरिक मूल्यों को विकसित करें। उन्होनें कहा कि ''राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुकूल शिक्षा के गुण एवं तत्व के विकास के लिए कारगर कदम उठाये जाएं, मौजूदा ढांचे में प्रत्येक स्तर पर सुधार किया जाए''।

अतः सम्पूर्ण क्रान्ति उपर्युक्त संदर्भो में बहुत ही प्रासंगिक है और आज की यह माँग है कि शिक्षा–पद्धति में बदलाव हेतु क्रान्ति हो जो भारतीय समाज की आवश्यकताओं को पूर्ण कर सके तथा समाजवादी भारत का निर्माण हो। इस प्रकार जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रान्ति ऐसी शिक्षा व्यवस्था हेतु क्रान्ति है जिसमें शिक्षा भारतीय समाज की आवश्यकताओं, हितों एवं मूल्यों पर आधारित हो।

रोजगारोन्मुखी शिक्षा

जयप्रकाश नारायण का कहना था कि भारतीय शिक्षा ग्रामोन्मुखी होनी चाहिए, गांव एवं शहर की शिक्षा समान नहीं होनी चाहिए, क्योंकि ग्रामीण एवं शहरी समाज की आवश्यकता भिन्न है।

इसलिए उनका कहना था कि एक शैक्षिक क्रान्ति होनी आवश्यक है जिसमें ग्रामीण स्कूल की व्यवस्था विकसित की जाए जो पारम्परिक एवं वर्तमान शिक्षा से भिन्न होगी तथा ग्रामीण पर्यावरण एवं आवश्यकताओं के अनुकूल होगी। इस भारत देश की ज्यादातर आबादी गांवों से पलायन के लिए विवश है। आवश्यकता है ऐसी शिक्षा की जो ग्रामीण समाज को वो सारे अवसर गांव में ही प्रदान करे जिसकी तलाश में वह गांव से शहरों की तरफ पलायन करते है। ग्रामीण विद्यालय में इस प्रकार की शिक्षा होनी चाहिए जो गाँवों के विकास का आधार स्तम्भ बने।

डिग्री–विहीन शिक्षा

आजकल भारतीय शिक्षा व्यवस्था की सबसे बड़ी कमी है कि बहुत लोग कालेजों में सिर्फ डिग्री लेने हेतु जाते हें जिसके आधार पर उन्हें काई नौकरी मिल सके। इसका प्रतिफल यह हुआ कि चारों तरफ ऐसे निजी संस्थान खुल गये जहां गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अभाव है। इसके साथ ही शिक्षा एक व्यापार बन गयी तथा भ्रष्टाचार की जननी बन गयी। शिक्षा संस्थाएं जो अच्छे मनुष्य के निर्माण का केन्द्र थी, का तो अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया। इसीलिए जयप्रकाश नारायण का विचार था कि डिग्री आधारित शिक्षा व्यवस्था को ही समाप्त कर देना चाहिए। उन्होनें कहा कि ''शिक्षा में कोई मौलिक परिवर्तन तब तक संभव नहीं है, जब कि या तो (क) उपाधियां समाप्त न कर दी जाएं या (ख) उपाधियों का रोजगार से कोई संबंध न रहे।''

उनका सोचना था कि जब तक डिग्रियों और नौकरी का संबंध तोड़ा नहीं जायेगा, तब तक डिग्री का झूठा मोह दूर नहीं होगा। इन व्यवस्थाओं में परिवर्तन करने हेतु उन्होनें कहा कि, मेरा सुझाव यह है कि नौकरियों देने वाले चाहे सरकारी क्षेत्र हो या निजी, जिस प्रकार का काम हो उसके अनुरूप स्वयं अपनी ओर से परीक्षाएं ले सकते है। भरती के बाद आवश्यकता हो तो वे अतिरिक्त शिक्षण और प्रशिक्षण की व्यवस्था कर सकते है। युनिवर्सिट की ओर से मात्र एक प्रमाण पत्र दिया जाए कि विद्यार्थी कितने वर्ष महाविद्यालय में रहा, कितने घंटे कक्षाओं में रहा और दुकानों, कारखानों, दफ्तरों और खेती आदि में कितना काम किया और किन विषयों में उसकी रूचि है। उसकी योग्यता और कार्यकुशलता को परखना उसे रोजगार देने वाले का काम होगा। योग्यता केवल डिग्री से न आंकी जाए क्योंकि डिग्री प्राप्त कर लेना योग्यता का प्रमाण पत्र नहीं हो सकता''।

अतः जयप्रकाश नारायण ने सम्पूर्ण क्रान्ति के दौरान डिग्री एवं नौकरी के बीच संबंध समाप्त कर योग्यता को आधार बनाने पर बल दिया।

श्रममूलक शिक्षा

भारतीय समाज पहले से ही वर्ग–आधारित रहा है। इस वर्ग व्यवस्था को समाप्त करने में शिक्षा की

महत्वपूर्ण भूमिका रही है। परन्तु वर्तमान शिक्षा–पद्धति के कारण समाज में एक नये वर्ग विभाजन की समस्या ने जन्म लिया–श्रम आधारित वर्ग। एक वर्ग जो मुख्यत शारीरिक श्रम करता है और दूसरा जो मुख्यतः बौद्धिक कार्य करता है। वर्तमान शिक्षा–पद्धति बौद्धिक कार्य करने वालों में श्रम के प्रति श्रद्धा का अभाव पैदा कर रही है जिसके कारण लोग शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त शारीरिक श्रम करना पसन्द नहीं करते तथा शारीरिक श्रम के प्रति और शारीरिक श्रम करने वालों के प्रति हेय दृष्टि रखने लगते हैं जिसके कारण बेकारी एवं अशान्ति की समस्या पैदा हो गयी। इसके कारण शोषण की समस्या भी पैदा हो गयी। भविष्य में श्रम आधारित वर्गो के मध्य संघर्ष की समस्या का सामना भी करना पड़ सकता है। जयप्रकाश नारायण किसी भी प्रकार की वर्ग व्यवस्था के विरूद्ध थे तथा एक वर्गहीन समाज की स्थापना चाहते थे इसलिए वह वर्तमान शिक्षा में परिवर्तन कर उसे श्रममूलक बनाना चाहते थे जिससे लोगों में श्रम के प्रति एवं श्रम करने वालों के प्रति श्रद्धा हो, सम्मान हो तथा लोग पूर्णरूपेण आत्मनिर्भर बन सकें।

वर्तमान शिक्षा–पद्धति या तो वर्ग संघर्ष की स्थिति पैदा कर रही है या फिर नया वर्ग पैदा कर रही है परन्तु वर्गहीन समाज की स्थापना में अक्षम है। जयप्रकाश नारायण का विचार था कि यदि शिक्षा को श्रममूलक बनाया जाए तो सभी के अन्दर श्रम के प्रति श्रद्धा होगी, सम्मान होगा। अतः जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रान्ति शिक्षा–पद्धति में ऐसे बदलाव हेतु क्रान्ति है जिससे शिक्षा श्रममलूक हो जिसके फलस्वरूप लोगों में वैचारिक परिवर्तन हो, लोगों में श्रम के प्रति श्रद्धा भाव उत्पन्न हो तथा वर्गहीन समाज की स्थापना हो सके।

सभी को न्यूनतम शिक्षाः

शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति हेतु आवश्यक है और यह निश्चित करना कि कोई अशिक्षित न रह जाए यह पूरे समाज का उत्तरदायित्व है क्योंकि शिक्षा ही समाज के सदस्य का निर्माण करती है जिसका प्रभाव पूरे समाज पर पड़ता है। एक सभ्य समाज की स्थापना के लिए आवश्यक है कि समाज में सभी को गुणवत्तापूर्ण न्यूनतम शिखा अवश्य मिले। जयप्रकाश नारायण सभी के लिए श्रममूलक न्यूनतम शिक्षा के पक्षधर थे। उनका कहना था कि ''शिक्षा प्रणाली को इस तरह गठित किया जाए कि उसका सीधा सम्बन्ध देश की समस्याओं के जुड़ सके। यह व्यवस्था भी हो कि न्यूनतम शिक्षा सबको मिल सकें और अज्ञानी तथा निरक्षरता का समूल नाश किया जा सके। शिक्षा में क्रान्ति का पहना चरम यही हो सकता है कि शिक्षा श्रममूलक हो और न्यूनतम शिक्षा सबको प्राप्त हो''।

अतः जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रान्ति सबको श्रममूलक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा अनिवार्य करने हेतु एक क्रान्ति है जिसे वर्तमान में सभी हेतु प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य कर एक कदम उठाया गया है परन्तु जयप्रकाश नारायण ने जिस स्तर की न्यूनतम शिक्षा हेतु क्रान्ति की परिकल्पना प्रस्तुत की उसमें अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है।

निष्कर्ष

इस प्रकार जयप्रकाश नारायण ने सम्पूर्ण क्रान्ति में जिस शैक्षिक क्रान्ति की रूपरेखा प्रस्तुत की वह वर्तमान सन्दर्भ में भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी उस समय थी। उनकी शैक्षिक क्रान्ति के कुछ विचारों को अपनाते हुए शिक्षा में कुछ परिवर्तन किया गया परन्तु अभी वह पर्याप्त नहीं है। उन्होंने शिक्षा को जीवनोपयोगी, ग्रामोन्मुखी एवं श्रममूलक बनाने हेतु सम्पूर्ण क्रान्ति का बिगुल फूंका। आवश्यकता है कि शिक्षा के सन्दर्भ में जिस सम्पूर्ण क्रान्ति का उन्होंने उद्घोष किया उस पर अमल करते हुए शिक्षा को जीवनोपयोगी ग्रामोन्मुखी, एवं श्रममूलक बनाया जाए।

संदर्भ सूची

श्रीवास्तव, शैलेन्द्र (2002) लोकनायक की सम्पूर्ण क्रान्ति परिकल्पना, सर्वोदय सम्पूर्ण क्रान्ति जयप्रकाश जन्मशती संस्मरण में प्रकाशित सर्वोदय समाज सम्मेलन, पटना।

रमेन्द्र (2002) सम्पूर्ण क्रान्ति और बुद्धिवाद सर्वोदय से सम्पूर्ण क्रान्ति–जयप्रकाश जन्मशती संस्मरण में प्रकाशित, सर्वोदयनगर समाज सम्मेलन, पटना।

शरण, त्रिपुरानी (2008) जयप्रकाश नारायण के शिक्षा चिंतन के संदर्भ में पंकज कुमार दूबे द्वारा त्रिपुरारी शरण का लिया गया साक्षात्कार (अप्रकशित), पटना, 28 जून, 2008।

नारायण, जयप्रकाश (1998) फ्राम स्पेशलिजम टू सर्वोदय, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी।

नारायण, जयप्रकाश (1999) सम्पूर्ण क्रान्ति सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी।

दस्तावेज (1984) सम्पूर्ण क्रान्ति की अवधारणा–छात्र युवा संघर्ष वाहिनी की राष्ट्रीय समिति का दस्तावेज नारायण, जयप्रकाश (1976) बिहारवासियों के नाम चिट्ठी संघर्ष कार्यालय, पटना।

नारायण, जयप्रकाश (1997) मेरी विचार यात्रा भाग–2 पार्ट सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी।

नारायण, जयप्रकाश (2002) सामुदायिक समाज रूप और चिन्तन, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी।

नारायण, जयप्रकाश (2003) कारावास की कहानी, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी।

बसु, दुर्गावास (1998) भारत का संविधान–एक परिचय, प्रेंटिस हाल ऑफ इण्डिया प्राईवेट लिमिटेड नई दिल्ली।

शाह, क्रान्ति (2002) जयप्रकाश की जीवन–यात्रा, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी।